3.3.1 (Supporting Documents)

Faculty Member's research papers



Fasting diet



International Journal of Home Sc

Best life diet

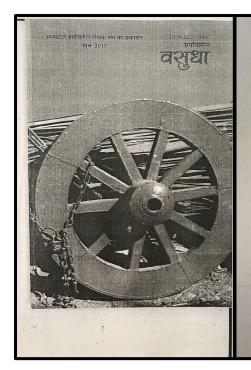
ternational Journal of Food Science and Nutriti SN: 2455-4898, Impact Factor: RJIF 5.14 sw.foodsciencejournal.com dume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 201-203

uism and the Victorian vegetarianism

Mayani Chaodhary nent of Home Science (Food & Nutri Haridwar, India

ISSN 2321-6883 (Online)

ISSN 2347-9515 (Print)



मुत्तेग जो की अभर कमा 'उसने कहा वा' को तिन्छी व्यक्तर सी से अधिक यह बोध पुके हैं। आज भी यह कहानी, चाहे जिसनी बार पड़ी जा पुकी हैं, हमारे लिए एक गयी कहाने की नहर हैं। यहसती है। इस कहानी के इस्तार्थी कर्ष पर कहानी के जा में बिडियन कमा के जा उसने की इस्तार्थी कर्ष पर कहानी के जा में बिडियन कमा के जा उसने की में पुरिवासिक की प्रतास्त्रिकत परिदाय पर बात तो असती ही है, एक साम्राज्यावी पुज की निस्सारा को भी रोखांकित करता है।

युद्ध के मोर्चे पर अतीत में जिए प्रेम की स्मृति: उसने कहा था

चंद्रपर हार्ग मुलेगे हिंदी के महत्वपूर्ण रचनाकार है निश्वंकार एवं इतिहास येता के रूप में भी उनकी सराठ भूमित्ता है। ऐसे बहुत कम लेखक है निश्वंकी रचनामानित को आलीवकी एवं पाइकी का हतना सम्मान, प्रेम और सरावान मित्ती हो। मूलेगे जो को कहानी 'हार्म कहा में अपने बिन्दान को राज्यों मूं कर पूर्व है। 1915 में केन 2015 इस्कों को कहानी 'हार्म कहा पर प्रदा्ध पर महार में कानी कुछ बदला। आर्थिक साधानण्याद की विध्वोधिका ने दुनिया को दो प्रधा विध्वद्धों में होत्रका आहेकमण लातन एवं प्रस्तावानी नीतिश्च ने हमेशा हिंस में ही बुद्ध की हम्मा मित्रका प्रदा्ध का स्वावध्य करने हम्मा हम्मा के स्वावध्य नहीं स्वावध्य की विध्वाधिक स्वावध्य की विध्वाधिक स्वावध्य की हम्मा मित्रका दिल्ला दिला प्रदान हित्रिय विश्व युद्ध की निर्मितिक एवं व्यवंभा पर।

िकाणिका एवं वर्षणा पर।
इटली के लेकक प्राम्तो लेकी ने पुढ वी भागवाल को लेकन कहा है 'इस वी शिवितों से जीशिक पर पर।
इटली के लेकक प्राम्तो लेकी ने पुढ वी भागवाल को लेकन कहा है 'इस वी शिवितों से जीशिक पर पर। सम्मूप के सावत नहीं है वह एक व्यंद्रान करने नाल किया था किसी मैंने अन्य निविद्यों के प्राप्त के लिकन के प्राप्त के सिक्त अपने ही है हम लिकी गए किया ने किया सामा के अपने के अपना इस जीशिक करें लोक मानूनी वे अधिक अस्मान अस्मान के प्राप्त के किया के प्राप्त के प्राप्त के किया के प्राप्त के किया के प्राप्त के प्राप्त के किया के प्राप्त के किया के प्राप्त के लेकन के प्राप्त के प्राप्त के लेकन क

Scholars Academic Journal of Biosciences (SAJB)

Sch. Acad. J. Biosci., 2017; 5(11):794-799

OScholars Academic and Scientific Publisher (An International Publisher for Academic and Scientific Resources)

Alteration in Length and Weight of Pungasianodon hypophthalmus under Extensive, Intensive and Semi-Intensive Culture Practice

Dr. Manveer Singh Kandari, Dr. Pooja Agarwal

Uttaranchal College of Science and Technology, Dehradun, H.N.B. Garhwal University(A Central University), Srinagar, Uttarakhand, India.

Original Research Article

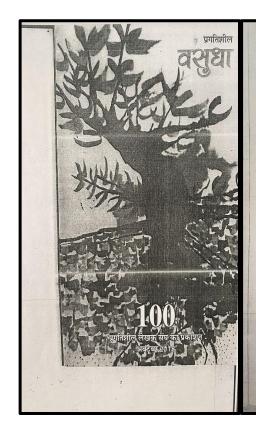
*Corresponding author Dr. Manveer Singh

Kandari

Article History Received: 25.10.2017 Accepted: 06.11.2017 Published: 30.11.2017 increase survival and cost associated with fish meal and other majors a comparative study was done under three experiment. Experiment-I was extensive culture practice, experiment-II was intensive culture practice and experiment-III was semi-intensive. The study was conducted for six months. Twenty five fingerlings of Thiapungus were randomly selected from the pool and stocked in each threearthen pond (3.00m×3.00m×2m). In the end of experiment highest weight, length and lowest mortalty(880gm, 35.10cm, 12%) was recorded in experiment-II, lowest length, weight and highest mortality(540.61gm, 29.50cm, 40%) was observed in experiment-I while for experiment-III, it was recorded 698.20gm, 33.48cm, 24%.

Abstract: Pungasianodon hypophthalmus is a cat fish. In an effort to promote growth,

Keywords: Pungasianodon hypothalamus, Cat fish, Extensive, Intensive, Semi-



इदयेश की कहानियां

जीवन राग के रचनाकार: हृदयेश विपन कुमार शर्मा

इत्येश ने जीवन के बंद कपारों को खोतकर, गाँव-देहत, गती-पुशके के आम मानुष को इसमें आजावाही को संभव बनाया। प्रेमदर के बहु को किसमाप्ती की परम्पार में अमसकांत और इत्येग 'अलग' खाई नजर जाते हैं। अजबती के पाता भारत के अंदर तेजी से पीच संपार हैं। मानिवार के बात हैं। इति होते हैं। स्वार्थित होते को उनकी कहानियों प्रिष्याण रखा हैं। विद्यानी जीने और दिवारी के बंध को डाई करनेदिन में हैं। धार्मित्वकारों के कार्त्राचे कार्त्राचे के बात को इत्युक्त में जीव हैं। धार्मित्वकारों के जिल्हों के स्वार्थित हैं। के कार्त्राचे कार्त्राचे की को इत्युक्त में वार्ष्य के कार्त्राचे के स्वर्धन के तो हैं। उनकी लेखन की सुरक्ताल सात 1951 में पहली करनी 'कमार्गित भारत को दें। हैं। धार्मामती में प्रकारित दें कि स्वर्धन कार्त्राचे के सात अपने कार्त्राचे हैं। यह पात्रा, खोट सार के लोग, अंगीर गती का सात्ता, इत्युक्तित्ता, अमरकचा, अतिविधिक कार्त्राचे लेखन सात्राचे के लोग, अंगीर गती का सात्ता, इतिविधिकारी, अमरकचा, अतिविधिक कार्त्राचे लोग होता है। उनकी सात्री बीच सात्री के स्वर्धन के सात्री की सात्री के सात्री के सात्री के सात्री के सात्री कर सात्री के सात्री के सात्री कर सात्री के सात्री की सात्री के सात्री कर सात्री के सात्री के सात्री की सात्री के सात्री के सात्री के सात्री के सात्री की सात्री के सात्री की सात्री के सात्री

प्रगतिशील वसुधा - 100

International Journal of Fisheries and Aquatic Research

International Journal of Fisheries and Aquatic Research ISSN: 2456-7248 Impact Factor: RJIF 5.44 www.fishjournals.com Volume 3; Issue 3; July 2018; Page No. 54-60



ISSN 2455-5967

Study on monthly variation in haematological and biochemical parameters of three Indian major carps under semi-intensive polyculture practice

Manveer Singh Kandari¹, Neelam Nautiyal², Geeta Rauthan³

Department of Zoology, Uttarnichal College of Science and Technology, Debradum, Uttarakhand, India

Department of Zoology, DAV (FG) College, Debradum, Uttarakhand, India

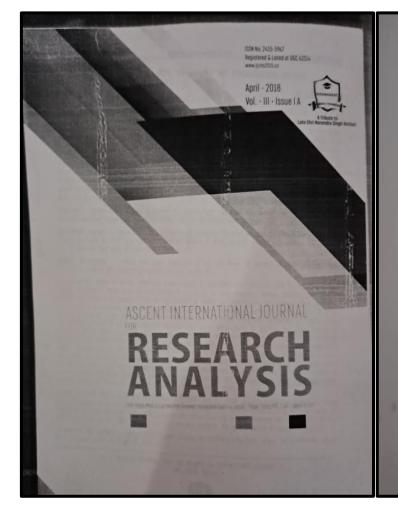
Department of Zoology, Sai Group of Institutions-Paramedrical College, Debradum, Uttarakhand, India

Abstract

Fromest study was designed for eight months to investigate the monthly fluctuations suparameters in the blood of three Indian Major Carps viz. Labor robust. Calla calla and Cirrimon norigala under Semi-intensive polyculare practice. Highest RBCs count, 186 % and PCV% in all three genera were observed in the month of June while the lowest was observed in March Highest values of ESR was recorded in the month of September for all three genera and lowest was recorded in the The companionly higher accrement in stud WBCs, count was observed from June-September for all three genera. The highest amount of glucose was recorded in the month of September and the lowest was recorded in March in all experimental finds. Highest amount of poiseen in all three genera was observed in the month of July and lowest was recorded in October. The amount of choic-sterol was observed highest in the month of July and Lowest was recorded in October. The amount of choic-sterol was observed highest in the month of July and J

Keywards: Indian many come DCV TCD

AIJRA Vol. III Issue I A www.ijcms2015.co



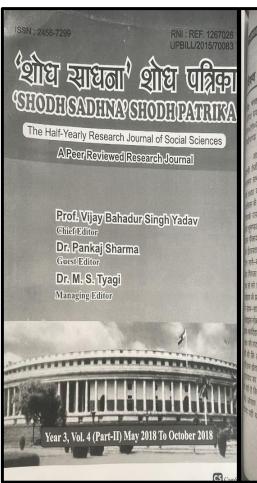
पतंजित योगपीठ : योग एवं आयुर्वेद का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ अमिता विहान

सार्राश—समाज एव यहत्वपूर्ण अकातरणा है। क्योंकि जाहा जीवन है यही समाज है। जाहा व्यक्तित के एक दूसर के
ताथ लामाजिक सम्बन्ध स्वाधित कर समाज के निर्मण और विकास में योगवान दिया है। वहीं समाज ने व्यक्तित का
समाजीकरण कर उसके व्यक्तित का तमाज के साथ प्रत्यक्त सम्बन्ध है। अपूर्वेद का विकास में योगवान का
अब वम्मणी हो जाता है। योग का तमाज के साथ प्रत्यक्त सम्बन्ध है। अपूर्वेद का विकास में प्रायोग समय है है
है। आयुर्वेद का महत्व भी वर्षमा समय में यहता चला जा तमाज के साथ प्रत्यक्त सम्बन्ध है।
अपूर्वेद का महत्व भी वर्षमा समय में यहता चला जा तमाज के आयुर्वेद का व्यक्ति की प्रायोग समय है है।
अपूर्वेद का महत्व भी वर्षमा समय में अनेक शोध कार्य भी किंगे जाते रहे हैं। वर्षमान समय
अब वर्णविद्ध योगवित पर केदित रहा है जिरम से सोग व आयुर्वेद का सामाजिक स्वाध्यक सहमें से प्रयोग करके प्रयाद
विकास वर्षा है। तथायों के सकलन में वैज्ञानिक प्रविधियों का प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोगों में प्रयोग करके प्रयाद
विकास वर्षा अपूर्वेद को प्राथमिक स्त्रोगों में यह स्वयक्त स्त्रोग में से अवलोकन ताक्षाका मार्ग है। वर्षमान को अव्यवस्त्र
वाध्य गया कि यत्वादित योगपीठ समाज से योग व आयुर्वेद द्वारा समाज में सकारात्मक प्रयाव जाता है।
प्रसादना— समाज एक महत्वपूर्ण अववारणा है। क्योंकि जार सांवाज में मार्ग कि यत्वादित सम्बन्ध के आयारण पर निर्मित व्यवस्था को सांवाज कहा। जाता है।
प्रसादनके अनुसार — समाज स्वयं साथ है सगदन है। समाज के लिये सहयोगी सम्बन्धों को आवस्यक माना गया है
अहात सम्बन्धों के आयार पर निर्मित व्यवस्था को सांवाज करा। कि प्रवाद के सांवाक्त प्रमाजिक सम्बन्धों के आवस्यक माना गया है।
अहा सम्बन्धिक लोगन में समाज समाजिक सम्बन्ध, समु व सामाजिक अन्त क्रियाओं आदि का सम्बन्ध के अवला सम्बन्धों के अवला सम्बन्धों के स्वयं के सांवाक्त है। समाज के लिये सहयोगी सम्बन्ध के आवस्यक स्वयं के सम्बन्ध के किंदिल (सम्बन्ध के स्वयं सम्बन्ध के सम्बन्ध के स्वयं सम्बन्ध के सम्वन सम्बन्ध के सम्बन्ध के सम्बन्ध के सम्बन्ध के सम्बन्ध के सम्बन्ध

पर्वजलि योगपीठ : योग एवं आयुर्वेद का समाजशास्त्रीय अध्ययन जो अमेला विद्यान



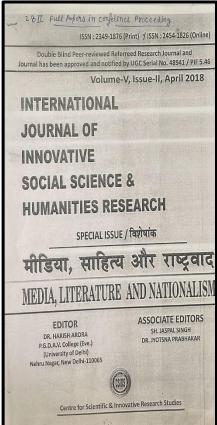


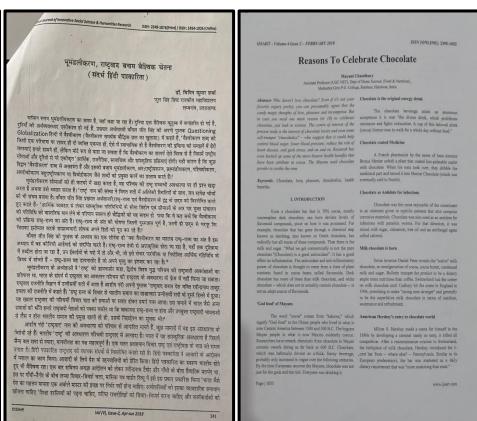
ISADHNA" SHODH PATRIKA में शर्कित सन्तुलन का बदलता स्वरूप ति सिंह चुफाल क्ता सैन्य विज्ञान विभाग विद्यालय् राजि स्नातकोत्तर महाविद्यालय् हुनिया में रलोबल शब्द का चलन जातियों के राष्ट्रवाद का सखी से दमन किया के बद गया है कि इसके आगे और अपने अंतिम दिसों स्वेतिकार जाएवा क राष्ट्रवाद का सर्वा से देन किया इस से बढ़ गया है कि इसके आगे और अपने अंतिम दिनों संविधत संघ को क्ये इस स्वाप्त्रवामों निस्तीज़ हो गयी हैं। यूरोप का मालिक तथा एक स्वप्त्रवास संघ को क्ये हुती से बढ़ सही अववारणायें निस्ताज हो गयी हैं। यूरोप का मालिक तथा एक महाराजन के कार्य कर मही अववारणायं निस्ताज में वाशिंगटन छोड़ा। के नाम से एक नीतिगत पहल शुरु हुई, कहें नाम पर्पया विरोधियों की उंडी लड़ाई में समाजवाद और नाम्यवाद कं व्यवस्था थे - जदारीकरण, नीजिकरण विरोधियों की उंडी लड़ाई में समाजवाद की हुइकेला व बाहुदीकरण | वर्ष 1970 तक इसने अपना इसलिए हार हुई कि सिद्धान्त को ताक पर हुद्धावर विसम्बर 1991 की रात रखकर कसी नेता मयंकर भागवाद की हताबा ज्वा नवकर भागवार की संवत के पैगम्बर योगु मसीह का जन्म भूल-मूलैया में भटक गये। यह बात भी सत्व है हार्या था पर वाता ना सत्य ह वान-बजाने के साथ मनाया जा रहा था कि जो देश कभी सोवियत छतरी के नीचे अपनी है हैत-बजार के पान होता घरों में मसीहा की शान में भिक्त सुरक्षा के मामले से निश्चिन थे, बिखर जाने के # इंद्र इप्रांसा के गीत गाये जा रहे हैं, वहीं बाद और अमेरिका को आंख दिखाया करते थे। का के प्रथम राज्य और मार्क्सवादी—लेनिनवाद सोवियत संघ के बाद विश्व एक घुवीय तंत्र के व्य-सव सोवियत कम्यूनिस्ट सुधारवादी रूप में बदल गया और इसी के साथ शीत युद्ध वत नोर्बाच्योव के परामव पर खुद गोर्बाच्योव का यूरोप से अन्त हो गया तथा अमेरिका पूरे कविद्य पढ़ा जा रहा था। 25 दिसम्बर विश्व का डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस बन ^{ही रात} यह कहावत वास्तव में चरितार्थ हो गया। अर इस दौरान उसने अपनी सम्प्रमृता कि लगभग उन सभी सुधारवादियों का का हनन किया या स्वतंत्रता के नाम पर अनेक हैं जो कंवल लोकप्रियता के लिए देशों को नयी प्रकार की गुलामी दी। हिं तासा अपनाते रहे हैं, यह विडम्बना बदलते राजनीतिक एवं वैश्विक परिदृश्य विकास अपनात रहे हैं, यह विख्यांना विद्वार राजगातिक रूप यह विद्वार से बीत युद्ध है है दुनिया की दूसरी महाशक्ति नेता में आज विश्व एकधुवीय वन गया है। शीत युद्ध के स्टालिम का सबसे बड़ा कसूर के समय विश्व द्विष्ट्ववीय इसलिए था, क्योंकि की वा कि जन्होंने स्लाविक तथा अन्य अधिकांश पश्चिमी यूरोपीय देश और चीन ने

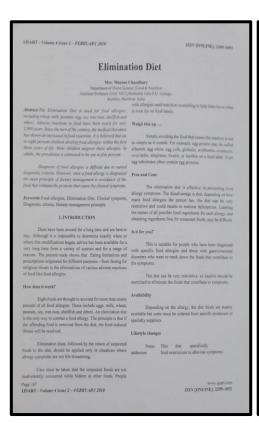
वास्तव में समाजवाद और साम्यवाद

Shodh Sadhna Shodh Patrika / 133

https://doi.org/10.3036/j.jalkem.2018.06.139 0925-8388/0 2018 Published by Elsevier B.V.







ISSN-2349-364X [[J Impact Factor: 2.193 वदाञ्जली अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित पाण्मासिकी शोध पत्रिका Peer Reviewed Journal of Multidisciplinary Research) भाग-५ अंक-११ वर्ष-६ जनवरी-जून, २०१९ प्रधानसम्पादक डॉ0 रामकेश्वर तिवारी वसिस्टेन्ट प्रोकेसर, श्री बैकुंठनाथ पवहारी संस्कृत महादिद्यालय बैकुंठपुर, देवरिया सह सम्पादक श्री प्रसून गिश्र प्रकाशक वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी वाराणसी

शुभम उनियाल मिना- भाषा व्यवहार में शब्दों का विशेष महत्व होता है। शब्द के विना अर्थ की प्राप्ति नहीं होती है। इसीलिए वेद के आविर्भाव के समय से ही शब्द और वर्ष का नित्य संबंध माना गया है। शब्द की उत्पत्ति इसोतिएत वह के आविशान के समय में हो तब आद यह का निर्मास से स्थान का एक उसके हैं कि उसके हैं कि उसके की उसके हैं कीर प्रत्यों को होते में स्पेत हैं हुए आवारण आढ़ की मीन वहीं भाषित में सरमार में प्रयुक्त छन्त अहाधार्यी कृत्यद्व करूप में केतानिक रिति में सुरक्षितों में निवस्त दिन्या और संस्कृत मात्रा के प्रयुक्त छन्त अहाधार्यी कीर रनना की। यहीं कारण है कि जाकरण को शब्द शाख़ के रूप में आपना कारण प्राप्त हों सो सर्वा बोले जाने जाल प्रत्येक शब्द निजी न किसी अर्च को बजलाता है। मारतीय माह्यूस में किस सब्द से किस अर्थ का ग्रहण किया जाय या शब्द का नास्तनिक अर्थ क्या होगा, को लेकर विशद विवेचन हुआ। वेद की रचना के साथ ही वेद के वर्ष को जातने का दशास हुआ। इन प्रवासों के परिधारमत्त्रकर वेसाइमें की रचना हुई। वेदार्थ की दृष्टि से निरुक्त वेदाइग का विशेष महत्व है। इसमें दैदिक पदों का संस्वान और उनकी व्याख्या की ग्रदी प्रस्तुत शोष्टपत्र शास्त्र की यदसंकरपना के चतुर्धों विभाग में निषात के स्वरूप

आचार्य यास्क के मत में निपात : अर्थ, स्वरूप एवं प्रकार

निपास शब्द का अर्थ- निपात शब्द नि+पत्+धञ् के योग से बनता है। भाषाशास्त्र में यह योग ज्यों का त्यों अर्थ में प्रयुक्त होता है। यास्क के अनुसार जो शब्द अनेक प्रकार के अर्थों में प्रयुक्त होते हैं वे निपात कहलाते हैं।' ये निपात प्रकरण के आधार पर तत्तत अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। भाव एवं सत्व की अप्रधानता त्या नाम और आक्षान<u> पड़ों से जुड़े</u> बिना ये अर्थामिश्चान करते हैं इसलिए इन्हें उपसर्प न<u>हीं साता</u> जाता है। तस्य है कि भाम पद श्चानु और प्रस्तय के अनुरूप अपने वर्ष का निर्धारण करता है। तिन्तु निपात में प्रकृति-प्रत्यय का स्पष्टीकरण नहीं होता है और ना ही वे आख्यातज हैं। इसलिए इन्हें पृथक् श्रेणी में रखा गया है। पाणिनीय व्याकरण में शब्द के प्रकृति-प्रत्यय के संबंध, विकार आदि का परीक्षण किए बिना या जो शब्द विना किसी रूप परिवर्तन या विकार के हू-ब-हू वाक्य में प्रयुक्त होते हैं उन्हें निपात कहा जाता है। श्लौनक के अनुसार वाक्य में कारक आदि सम्बन्धों की अपेक्षा किए बिना ये कहीं भी प्रयुक्त होने के कारण निपात कहे जाते हैं।³ ऋक्त्रातिशाख्य में भी निपात का प्रयोग इसी अर्थ में हुआ है। इस विवेचन से स्पष्ट होता है कि जो शब्द अर्थ की दृष्टि से कम महत्वपूर्ण हैं या जिन शब्दों के पास वर्ष धारण करने का स्पष्ट और तर्वसंगत आधार नहीं होता है उन्हें निपात की श्रेणी में रखा गया है। निपात की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि- निपात की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर जाने पर पता चलता है कि इस शब्द का प्रयोग वैदिक संहिताओं में केवल पैप्पलाद संहिता में हुआ है। किन्तु यह शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ऐसी कोई स्पष्ट जानकारी प्राप्त नहीं होती है। प्रयुक्त ब्राह्मण ग्रन्यों में भी इस शब्द का प्रयोग नहीं सिकता है। कतिपत्र ब्राह्मण ग्रन्थों में इस शब्द का प्रयोग तो हुआ है किन्तु यह कह पाना निश्चित नहीं कि वह इसी (वर्तमान) अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। किन्हीं ब्राह्मणों में यह शब्द नि+पत् के योग में तिङ्त पद के रूप में हुआ है।⁶ किन्तु वह यहां भाषाशास्त्र के पारिभाषिक अर्थ में नहीं हुआ है। इस दृष्टि से इसका प्रयोग गोपय ब्राह्मण(१-१-२४,२६) में हुआ है। आगे चलकर वेदांग साहित्य में इस शब्द

का अधिक प्रयोग देखने को मिलता है। निरुक्त में देवविद्या के संदर्भ में यह शब्द अपनी पारिभाषिक

स्वीकृति पा चुका था। वैदिक देवविद्या के आचार्य गौण रूप से स्तुत देवताओं को निपात/नैपातिक देवता

क्त में गौण वस्त के अर्थ में इसका प्रयोग चुले तीर पर दिखाई देता है।7 यही कारण है कि

का अध्ययन करता है।

4

Website - www.researchjourney.net Email - researchjourney2014gmail.com

"RESEARCH JOURNEY" International E- Research Journal ISSN: 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-7143 | 2348-71 Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013) UGC Approved Journal

183

आमजन की पीड़ा के ताप को महसूसती कविता

(संदर्भ उदारीकरण के पश्चात की कविता)

विपिन कुमार शर्मा

Email:vipinsharm nhad82@Gmail.com

सन १६६० के बाद का समय देश-दुनिया के लिए परिवर्तन का काल है। आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक रस से दुनिय एक नये विचार की ओर बढ़ रही थी। अथवा वह अपनी पुरानी कैंचुल की और सांस्कृतक रस स तुनय एक नय ।वचार का आर वढ़ रहा था। अथवा वढ़ अपना युर्तना कचुल का आर लीट रही थी। पूँजीवाद की क्षस्तेना करते हुए वामपंषी विचार प्रणालियां बीसवर्षी सदी के अंतिम कालखं में दुर्भाय से होंफने लगी। दुनिया को अपना मंत्रिय्य स्पष्ट दिखाई देना चाहिये था मगर ऐसा हुआ नही। पूँजीवाद के प्रमामंडल ने बाकी सभी विकल्यों के सामने सवाल खड़ा कर दिया। सवाल न केवल हूवादलों के विमर्ख का हाशिये पर चले जाने का या, सवाल यह भी था। मजहूर किसानों गैंवाई, देहात के बाशियों के जीवन का क्या होगा। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खाडी युद्ध अमेरिको ईजारेवारी का प्रमाण था। तानाशाही और अधिनायको के लिए 'आनंदकाल', तीसरी दुनिया के देशों के लिए अंथकार काल। ऐसे में कविता के सामने बुनियादी सवाल यह था, वह अपनी उपयोगिता कैसे सिद्ध करे। टेलीविजन और इंटर नेट के दौर में लय, ताल, संगीत आरोह-अवरोह की ओर जनसमूह के मन को मोड़ना था। कवि ने ऐसा किया भी। कविता को वह जनसमूह के नजदीक लेकर जाता है। यहाँ आकर कविता जनसमूह के जीवन का पाठ बन जाती है-दिन भर लकड़ी ढोकर माँ आग जलाती है

पिता डाकखाने में चिट्ठी का इंतजार करके लौटते है हाथ-पाँव में दर्द की शिकायत के साथ। रात में जब घर काँपता है/पिता सोचते है/जब मैं नहीं हूँगा/क्या होगा इस घर

'घर के द:ख. दारूण स्थितियों का आख्यान मंगलेश डबराल की कविताओं में बार-बार उभरता है चर के 3-ज, अरुप राज्यात्मा का जाव्यान गर्यका करवाता का कावाताजा मुजारिका करवाताजा मुजारिका करवाताजा मुजारिका क कुछ कविताजों में पिता की गढ़त व्यवसी उपराति हैं, कुछ कविताएं माँ के तस्वीर में न होने की वजह को साक्षा करती हैं। जब भी बित्र खीवानें की बात आयीं माँ घर के किसी काम में मश्रानूल थीं; अपना लकड़ी लेने जंगल गई थी। मेंगलेश की कविता देश के दूर-दराज में जीने वाले पहाड़ी मनुष्यों का वास्तविक आईना है। पहाड़ पर विस्थापन एक बड़ी समस्या है, आर्थिक एवं पर्यावरण समबन्धी कारण उसकी जद में है मंगलेश डबराल शहर बनाम गाँव के सवाल को अपनी कविता में बार-बार उठाते हैं-मैने शहर को देखा और मैं मुस्कुराया

वहाँ कोई कैसे रह सकता है यह जाननें में गया। और वापस न आया।^(२)

(आधार चयनः मंगलेश डबराल)

डक्कीसवी सदी में हम एक नये समय से साक्षात्कार करते है जहाँ अंतराष्ट्रीय पूँजी की इजारेदारी है, इंक्शतरावा संघ म हम एक नव समय स सावात्कार करत ह गां। अतराष्ट्राय पूजा का इजारदार ह, वस्तुओं से पटे बाजार हैं वहीं दूसरी और पृष्ठ से त्रस्त बहुतंख्यक वर्ष हैं। हिंसा और वर्षस्य का संस्थानीकरण इस संधी में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है, ऐसे में कविता की क्या मूमिका है, यह प्रस्न

Website - www.researchjourney.net

Email - researchjourney2014gmail.com

IIJ Impact Factor : 2.206

ISSN - 2395-5104

शब्दार्णव Shabdarnav

Vol. 9, Part-V

Scientific Research Educational Research Technological Research Literary Research Rehavioral Research

Editor in Chief DR. RAMKESHWAR TIWARI . Shree Baikunth Nath Pawahari Sanskrit Mahavidvala Baikunthpur, Deoria

> Executive Editors Dr. Kumar Mritunjay Rakesi Mr. Raghwendra Pandey

> > Published by Samnvay Foundation Mujaffarpur, Bihar

आचार्य यास्क की पदसंकल्पना में आख्यात का स्वरूप

मूमिका- भाषा भाव संप्रेषण का मुख्य अक्षार होती है। समस्त प्राणी अपने भानों को अभिव्यक्त करने के भूभिकेन नाथ भाग शर्मा का नुष्य अधार हाता है। समस्य प्रामी बग्नी मानी को अभिव्यक्त करने के तिए सामिदिक को अवस्य को हैं। हात्के लिए वो चिनिक प्रमित्यों का प्रामी करते हैं। उन्लेक पृत्र आति की करनी ध्वनियां होती हैं विससे उनका करवार नहता है। वेत्रिक ने करियों बच्च मानी वर्ष के लिए दुवाँछ हैं। मुख्य इस दिया में आदिम कार से प्रशास करता रहा हैं। उनने मनुष्येतर प्रामाओंबोदियोंधानीयों को बानने का प्रयास किया। वस्पी बासा के विद्योग्ध में यो उनने बहुत परिश्रम दिवा परिश्रमकः वह सफल हुआ। ब्राह्मण ग्रत्यों में भाषा के विकसित स्वरूप को निरुक्त कहा गया है।' क्योंकि वह भाषा व्याख्यात है। रक में मनुष्य की बाजी की व्यक्तता को निरुक्तवा या स्पष्टता कहा गया है।² स्पष्ट है कि भाषा भाव व्यक्त करने का माध्यम है और माचा का आधार शब्द होते हैं। शब्दों के माध्यम से समस्त प्राणी वर्ग व्यवहार करते करने का माध्यम हूँ और माया का काबार बन्द होते हैं। तथा के माध्यम से समस्त प्राणी वर्ष व्यवहार करते हैं। तथा या पर भी दो प्रकार के होते हैं, एकाबर उस अर्थक स्वारायों के समूह को बात्म कहते हूँ। वाक्य निर्माण में पर भी राज्य कि पहला होता है। विकेष पर्यों के वर्ष वजुनीतीय की पृष्टि से वास्क ने मिरक सामक महत्त्वपूर्ण बात्म की रचना की वहीं का साम हाजा इस साम स्वाराय की महित्य की विकेष साम प्राप्त होंगा इस साम स्वाराय की महित्य की प्रकार की मिलक की विकेष साम प्रमाण होंगा है। इस साम स्वाराय की महित्य की प्रकार की महित्य की प्रकार की स्वाराय की साम क

ा है चर्चाकर का द्वारा कर कर नाय परणा नाय के कारणा नाय कर है। होता है। यह परणा नाय कर है। तो दे पढ़ों हुए वास्त्र के तो निष्णु के बाते के सामाजात किया। उन्होंने तीया काल्यात करते हुए अपनी ताबा के सैद्धांतिक पत्ती के त्यह किया। इसने परविज्ञान महत्त्वपूर्ण के हैं। परविज्ञान के प्रमुख्त सो देशों हैं। यहनी ऐतिहासिक हैं। इसने देश-कात को खबार बनाकर तत्यम, तद्भद्र, अपष्ट कादि वर्गीकरण ना जाता है। इस दृष्टि के अंतर्गत यास्क ने पद के दो विमाग किए हैं- भाषिक और नैगमा⁹ लोक में बोले । बाने शब्द भाषिक और जिनका प्रयोग बैदिक साहित्य में हुआ वे नैगम हैं। इसी विभाग को पाणिनि

ने वाले तबर मारिक और देशका प्रयाग बोरक साहत्य म हुआ व नगम है। इसी वचाग का पाणान किसी और देशिन कहते हैं। इससे दृष्टि आक्स्मिन हैं। वह वर्गीकरण कई आधारों पर होता है। पहला सबसें की लोक में ब्यास पि और निर्मित्त के आधार पर होता है। अवाग्यें इस के बनुसार तब्द की प्रमृति अर्थ को प्रकट करता है इस रूप में पर एक ही है। 'बबकि महामाणकार का मत है कि सब्द की प्रमृति वारि, मुण, जिसा और खा को प्रकट करने की होती है। इसी आधार पर शब्द भी चार प्रकार के होते हैं।⁵ दूसरा वर्गीकरण ना के आधार पर हैं। इसमें प्रकृति प्रत्यव को आधार मानकर शब्द-विभाग किया जाता है। जैसे- तिङ्न्त, त, तद्धित, तद्धितान्त और समास। प्रयोग के तरीके आधार पर दृष्टव्यय और अव्यय दो पद हैं। वे शब्द के विभिन्न रूप प्रयोग में आते हैं। जैसे- सुबन्त और तिङ्न्त। जो वाक्य में बिना किसी विकार के प्रयोग में जाते हैं, वे अब्यय कहलाते हैं।

यास्क इन सभी आधारों से परिचित थे। लेकिन उन्होंने इन्हें मानकर पद विभाग वर्गीकरण प्रवृत्ति-निमित्त और प्रयोग की पद्धति को आधार बनाकर किया गया है। प्रवृत्ति-निमित्त का ार्य जाति, गुण और सदुच्छा बाचक शब्दों में सत्त्व की प्रधानता से है। इन तीनों प्रकार के शब्दों को **वे** वर्ग में रखते हैं। संज्ञी (सत्त) के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द को नाम कहते हैं। संज्ञी के लिए प्रयुक्त क्रिया बारुवात कहते हैं। अव्यय शब्दों का नाम, आख्यात के साथ अर्थापिधान कराने वाले शब्दों को उपसर्ग जाता है। शेष अव्ययों में विविध अभिप्राय के लिए प्रयुक्त शब्द निपात कहे जाते हैं।' यास्क के अनुसार . लेता, भोरतीय भाषा केन्त्र, भाषा, साहित्य एवं संस्कृति मध्यपन संस्थान, जबाहरताल नेहरू विश्वविद्यालय, नई

This is an open access article published under an ACS AuthorChoice License, we consider and redistribution of the article or any adaptations for non-commercial



Dual Modality FeS Nanoparticles with Reactive Oxygen Species-Induced and Photothermal Toxicity toward Pathogenic Bacteria

Shrish Agnihotri,[†] Tarun Mohan,[†] Diksha Jha,[‡] Hemant Kumar Gautam,[‡] and Indrajit Roy

†Department of Chemistry, University of Delhi, Delhi 110007, India ‡Institute of Genomics and Integrative Biology, Sukhdev Vihar, Mathura Road, Delhi 110025, India

3 Supporting Information

ABSTRACT. Bacterial infectious pose a major threat to human health, primarly because of the evolution of mutted strains that are resistant to antibiotic treatment. As a value humanic, several unasynation have emerged as strained unastived interaction attention and the strained agents. Herein, we report the development of into suitide (FeS) anatoparticles that show dual-modally destropes insured in the course of the strained agents. Herein, we report the development of into suitide (FeS) anatoparticles that show dual-modally destropes many strained in the strained and spitial properties. These anatoparticles showed sustained relates of Fe² itses in an approach dispersion. They do have a high bactopina consessedint in the visible and expected properties. They do how a high bactopina consessedint in the visible and considerable of the strained of the



Ac

1. NIRODUCTION

It is well known that traditional antibiotics have limited utility in the treatment of bacterial diseases/infections owing to the development of several matteds, antibiotic-resistant status. It is a several matted, antibiotic-resistant status. It is a several matted, antibiotic-resistant status. It is a several matted, and the several matted and the several matted and purposes. Several matches and several matted and the several matter and

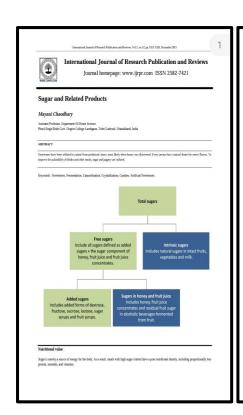
exposure.

Ton-containing oxides and chalcogenides represent an important family of nanomaterials and have extensively been used in various biomedical applications, such as antimicrobial action, magnetically guided ding delivery, contrast enhancement in MRJ, ac magnetic field induced byperthermia therapy,

and so forth, 31–31. They are also easy to optoberize and, in general, are found to be side for knowled applications. Not only do they have unique magnetic properties (e.g. ferromagnetic, opergramagnetic, e.g.), but they also childle attractive optical absorption covering the visible and near infrared (NIR) region. As a result, they are also emerging as efficient ranoom sterials for photochermal therapy (PITT), which has application in trending control and infrarenteevy and microbal classes. PIT is known to stiffer physical damage on street and the state of the state of

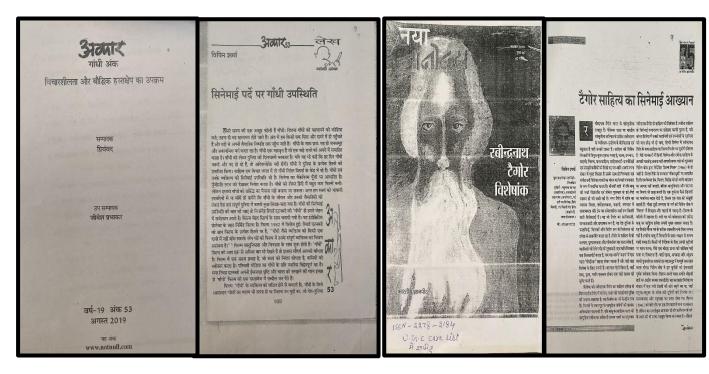
ACS Publications © XXXX American Chemical Society

DOI: 10.1021/accomega/9683177 ACS Omega XXXX, XXX, XXX, XXX









NTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH CULTURE SOCIETY Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Received on: 09/08/2019

ISSN: 2456-6683 Volume - 3, Issue - 8, Aug - 2019 Scientific Journal Impact Factor: 4:526 Publication Date: 31/08/2019

Analysis of soil physical properties of different land forms in and around Nagal Hatnala region, Dehradun

¹Brij M Upreti, ² Manveer Singh Kandari

*Head department of Botany, 2*Head Department of Zoology Uttaranchal College of Science and Technology, Dehradun. Email - Brijmupreti@gmail.com, 2manveerkandari@gmail.com

Abstract: Soil is defined as, an independent body in nature with a unique morphology from the surface down to the parent material as expressed by the sample profiles. Different parameters were used to analyse the soil physical properties viz soil texture, Water holding capacity, moisture content, bulk density, porosity. Present study shows maximum sand percentage (53.03%) in construction area while minimum percentage (38%) in water resource area. Maximum and minimum silt percentage recorded from construction area (37,75%) and water resource area (33.24%) respectively likewise water resource area shows maximum and minimum clay percentage i.e. 23.94% and 14.13%. Water resource area and construction area shows maximum and minimum bulk density i.e. 1.12g/cm² and 0.97 g/cm3 respectively. Maximum and minimum water holding capacity was recorded at Agriculture land (19.29%) and construction area (10.42%) respectively. Construction area shows maximum porosity (63.45%), pH (6.8) while minimum at water resource area i.e. 57.72% and 5.2 respectively. As per above observation this can be estimated that water source area and agriculture land having better soil physical properties as compare to construction area, it is due to over constriction and deforestation around construction area.

Key Words: Soil profiling, Water Resource Area, Construction Area, Agricultural Land, Dehradun.

2019 JETIR June 2019, Volume 6, Issue 6

www.jetir.org (ISSN-2349-5162)

Alteration in haematological parameters in fresh water cat fish Pangasius pangasius in different water pH range.

Dr.Manveer Singh Kandari¹ and Dr. J.V.S.Rauthan²

Deppt. Of Zoology, Uttaranchal College of Science and Technology Dehradun.

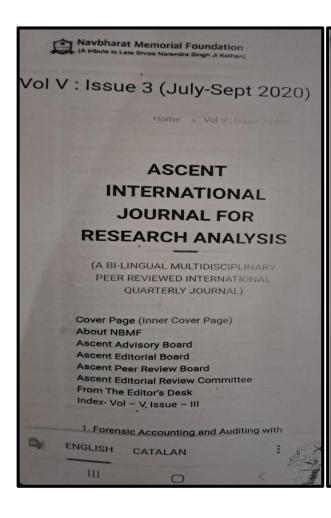
Deptt. Of Zoology DAV(PG) College, Dehradun²

Abstract:Present study was design to record the haematological parameters of Pangasius pangasius in different water pH environment. The experimental sets were having different pHviz.,pH4.50,(experiment-I),5.00(experiment-II),6.00(experiment-III),8.00(control,experiment-IV),9.5(Experiment-V). The experiment was conducted for a period of 10 days. Non significant decline in RBCs, Hb, PCV, and MCHC was recorded in experiment-I,II,III and V, but MCV and ESR level increased non significantly while TLC increased singuificantly when compared with control. The data was statistically analyzed by graphped prism5 at different significant level.

Key wards: Pangasius pangasius ,ESR,PCV, MCHC,TLC.

LINTRODUCTION: As there is little evidence of pollution affecting the health of fish and shellfish on a global scale, Although there is no dispute that pollution can affect the health of aquatic organisms under experimental conditions and may be responsible for the decline of populations of such animals in some inland waters and some estuaries, most of the evidence for pollution causing or increasing disease in fish in open waters is circumstantial(D.Bucke, 1993).

There is no dispute that during last 50 year,industrialization and urbanization is increased consequently



AIJRA Vol. V Issue III www.ijcms2015.co ISSN 2455-5967 अनुसूचित जाति में शिक्षा द्वारा सामाजिक गतिशीलता ब्रॉ अमिता बिहान क्षाय साधार ।

काइवर एवं पेज (1949) जहां जीवन है वही समाज है व्यक्ति और समाज मे पारस्परिक निर्मरता पाई जाती है

व्यक्ति ने एक दुसरे के साथ सामाजिक सम्बन्ध स्थापित कर समाज के निर्माण एवं विकास में सहायता प्रदान की है,

बही समाज ने न्यक्ति का समाजीकरण कर उसके व्यक्तिन विकास में योग दिया है। सम्भता एवं संस्कृति के कामन

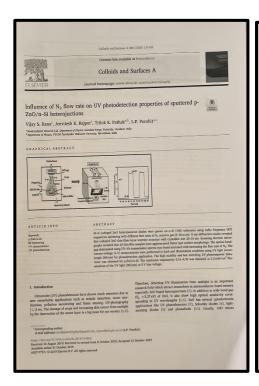
पर समाज को कई बर्गों में विभाजित किया गया है। इस कारण समाज मे हर व्यक्ति को अपनी एक निर्मत

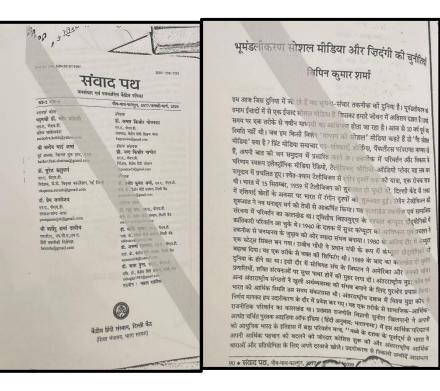
समाजिक स्थिति प्रदान हो गयी, जिसे आगे यतकर जाति वयतस्था का नाम दे दिया गया। सामाजिक परिवर्तन एवं

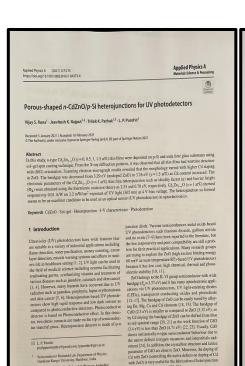
अनुसन्धान समाज शास्त्र का मुख्य विषय है। सामाजिक मतिशीलता भी सामाजिक परिवर्तन का एक पक्ष है। जिसे

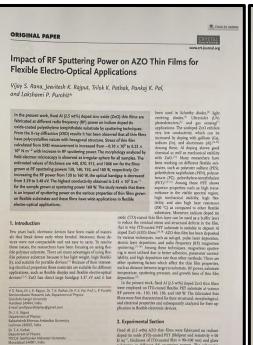
विशेष अध्ययन के काम में सामाज शास्त्र में स्थान दिया गया है। अध्ययन हरिद्वार स्थित मायापुर के बल्मीकी बस्ती

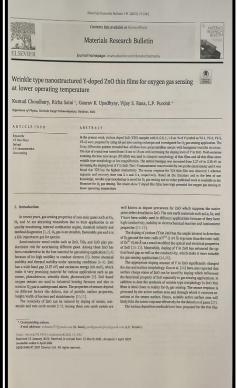
के अक्तर्य कि किया सामीण। .मैकाइवर एंव पेज, के अनुसार, 'समाज शितियो एवं कार्य प्रणातियो की अधिकार एंव पारस्परिक सहायता की, अनेक समृहों तथा विभागों की, मानव व्यवहार के नियन्त्रणों तथा स्वतंन्त्रताओं की एक व्यवस्था है इस सदैव परिवर्तनशील जटिल व्यवस्था को हम समाज कहते हैं यह सामाजिक सम्बन्धों का जाल है और यह हमेशा परिवर्तित होता रहता हैं समाज के अन्तर्गत यह जाति का गम व्यक्ति के सामाजिक एवं जीविका के कार्य का आयार रहा। इस कारण सामाज के अन्तर्गत एक अलग प्रकार की कार्य सम्यता का निर्माण हुआ जो जातिगत कहलायी। प्रत्येक जाति समृह की अपनी एक पहचान अपनी एक अलग प्रस्परा तथा अपना जातिगत व्यवसाय कार्य सम्यता के रूप में विकरित होता चला गया। समाज विज्ञानी ऐसे कार्य को परम्परागत सांस्कृतिक संज्ञा प्रदान करते आये है जिसमें हर व्यक्ति अपनी परम्परा प्रथा, जनरीतियो, व्यवसाय इत्यादि को जाति के आपार पर महत्व देता चला गया तथा महत्व हैं जी अपनी परम्परा प्रथा, जनरीतियों, व्यवसाय इत्यादि को जाति के आपार पर महत्व देता चला गया तथा महत्व हैं शा रहा है। भारतीय समाज जो एक तरह से जाति प्रधान पत्र प्रवाद की प्रधान प्रसान पत्र सांच हुआ है। आज भारतीय समाज में जाति और परम्परागत पैसे पर्यायवायों के रूप में समझे जाते है और इसमें सम्माजिक या यह है और आर्थिक तमों को देखते हुगे अनेक जातिया अन्य व्यवसार्थिक गतियों कि देखते हुगे अनेक जातिया अन्य व्यवसार्थि पर दूसरी जातियों के पेशों को अपना रही है। और आर्थिक तमों को देखते हुगे अनेक जातियां अन्य व्यवसार्थिक गतियों के प्रधान के सेव हैं के अन्तर में लिए हैं। सामाजिक अध्ययन जिसे हम सामाजिक एवं व्यवसार्थिक गतियोंतिला कह सकते हैं समाजवारात्रीय अध्ययनों का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है है। अपना व्यवसार्थिक प्रधान के सेव 26 के अनुसार शिक्ता सबका अधिकार है। सिक्त व्यक्तित के पूर्व किस की अध्ययन के सेव 26 के अनुसार शिक्ता सबका अधिकार है। सिक्त व्यक्तित के प्रधान की की अपना एवं व्यवसार्थिक मानवाधिकारें एवं मृतनुत स्वतन्तन के प्रति देशा को अपना एवं व्यवसार्थिक के सुति हो के ब्रव सामाजिक न्याय एवं जनते के वित्र की धी वरन इसका चरेश्व सामाग्य कार्यकर्ती की बमता एवं योग्यता में वृद्धि सामाजिक न्याय एवं जनते के वित्र की धी वरन इसका चरेश्य सामाग्य कार्यकर्ती की बमता एवं योग्यता में वृद्धि सामाजिक मितिसीलता अनुसूचित जाति में शिक्षा द्वारा सामाजिक गतिशीलता

















रेणु की कहानी 'तीसरी करम उर्फ मारे गए गुलफाम'

'तीसरी कसम' प्रेम में डूबा गहरा आलाप

विपिन शर्मा अनहद

■ विदेन करनी जनादर

— विदेन करनी जनादर

— विदेन करनी निर्माण के साथ के उसके के उसके करने के कि करन करने के कि कर करने के असाथ के असाथ कि असाथ के असा

अस्ट्रार-दिसम्बर 2020

ठमधी अध्य



ACTA SCIENTIFIC PHARMACEUTICAL SCIENCES (ISSN: 2581-5423)

Synthesis, Characterization and Application of Norm Encapsulated Zinc Phthalocyanine Nanoparticles as Photo Dynamic Therapeutic Agents

Tarun Mohan^{1,28}, Hemant Kumar¹, L. Krishna Bharat¹ and Indrajit Roy^{1,8}

Department of Chemistry, University of Delhi, Delhi, India Government Degree College, Gairsain, Uttarakhand, India Federal State Budgetary Scientific Institution Tederal Scientific Agroengineering Center VIM" (FSAC VIM), Moscow, Russia

Center VIF (FARC VIFI), PORCOW, MAISSE

**Corresponding Author: Tarun Mohan Department of Chemistry, University of Delhi, Delhi, India. E-mail: tarunmohandu@gmail.com and Indrajit Roy Departm of Chemistry, University of Delhi, Delhi, India. E-mail: indrajitroy11@gmail.com

Abstract

Namoized organically modified zilica (NORM) particles are promising platforms for encaprolating/conjugating active agents
petitions in bioimagning light activated therapies and drug delivery. Photodynamic therapy (PDT) is an encouraging and significant
therapeutes technique in which light is used to activate photocensitizer moderactes, that further next with molecular drugge
produce highly reactive and cytomic singlet conyens. Localized PDT can lead to selective killing of multiclous cancer cells. Herein,
have symmetrized into photolocynimic Cargle encopatated NORM particles (2004/NORM), in which after act as at the photochynamic
and NORM particles act as a currier and also stabilizer of ZuPc. Further characterization of nanoparticles has been done by varie
techniques to study the mosphology activative and optical properties ABROMA de vast used to evolute the photochynamic tells
properties. These nanoparticles have great potential for being a PDT agent as these nanoparticles significantly gener singlet oxygen on irradiation with laser light, along with some hyperthermia (rise in temperature). In vitro studies have been out using adenocarcinomic human alveolar basal epithelial (AS49) cells to study the anticancer PDT efficacy of ZnPc/NORM.

Keywords: NORM; Zinc Phthalocyanine; Photodynamic Therapy; Hyperthermia; Cell Viability Assay

In recent years chemotherapy, radiotherapy, surgery and few other methods were used for cancer treatment [1-3]. Although these techniques prove to be effective, one of the main issue en-countered in treatment is the destruction of healthy cells along countered in treatment is the destruction of heality cells along with cancerous cells. To overcome these compilications photodynamic therapy (PDT) is actively used in treating several cancers in the clinic, along with demantalogical diorders and microbial inflections; [4-6], etc. PDT is a non-invaries technique in which a photosensitizer during is activated with light for the transmission of molecular oxygen into the cytotoxic singlet oxygen [7/8]. Pure

Published: June 09, 2021

© All rights are reserved by Tarun Mohan.,

Phthalocyanines belongs to the family of macrocycles whit tains extensively delocalized 18-m electrons system. Their tural planarity makes them insoluble in common organic so [12-44]. Owing to their excellent singlet oxygen plotness phthalocyanines have been applied in PDT as efficient pho



ACTA SCIENTIFIC CANCER BIOLOGY (ISSN: 2582-4473)

Volume 6 Issue 2 February 2022

Synthesis and Characterization of Biogenic Iron Sulfide Nanoparticles in Cancer and Other Biomedical Applications: A Review

¹Department of Chemistry and Chemical Science, School of Physical and Material Sciences, Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala, India
²Department of Chemistry, Ramjas College, University of Delhi, India
³Department of Chemistry, University of Delhi, India

Bhaskaracharya College of Applied Sciences, Department of Chemistry, University of Delhi, India

sponding Author: Balaram Pani, Bhaskaracharya College of Applied es, Department of Chemistry, University of Delhi, India.

Received: October 01, 2021 Published: February 04, 2022 © All rights are reserved by Balaram Pani.,

This review focuses on recent breakthroughs in the physicochemical approaches and biological approaches of metallic iron, iron sulfides, and iron oxide nanoparticles for a variety of applications. The range of kinds, topologies, and physicochemical features of nano-sized iron sulfides has piqued researchers' curiosity. Furthermore, this study examines the medicinal, environmental, and technical uses of biogenically synthesized NPs, as well as the hurdles that must be overcome in order to optimize the environmentally friendly production of these critical nanoparticles. FeS NPs have a good effect on biological activity due to their ease of production magnetic properties, biocompatibility, and biodegradability. Also canvased are the FeS NPs nanoparticle-specific biomedical applications in cancer treatments. The goal of this review is to discuss the synthesis, characteristics, and uses of nano sized FeS NPs in biomedical domains, revealing that they have significant promise for enhancing human health and excellence of life.

Keywords: Iron Sulfides; Surface Modification; Biocompatibility; Cancer Therapy; Photothermal Therapy; Biosens Agents: Enzyme-Like Catalysis

Nanoscience can be explained as the study of the property of matter and structure on a nanoscale between 1 -100 nm. The several properties of the matter like interfacial and surface chemistry useful in nanotechnology's applications. The high surface-to-vol-ume ratio useful in catalysis, it enhances the chemical properties of nanomaterials. Mechanical properties boost the strength hardness in lightweight nanomaterial and Nanocomposites [1]. It purely depends on the unique and size-dependent property of solid matter.

The biomedical nanotechnology is an interdisciplinary field of study that spans health, science and engineering. It also has a

wide variety of molecular diagnostic, molecular imaging, and tar-geted treatment applications. The amalgamation of nanotechnol-ogy with molecular biology has begotten a new research area or sector that transforms biomedical research by providing specific imaging techniques, nano-robotics, and nano-devices, etc [2-3]. Nanomaterials with a spherical shape are very useful in the field of nanomedicine as they are similar in dimension to biological mac-romolecules, and smaller than cellilar organelles. The nano-sized particles such as iron oxide and quantum dots have magnetically, optically, or structural properties that differ from the bulk mater-rials. These biocompatible nanoparticles have a high affinity and selectivity for sick cells and organ-like malignant tumors. Nanopar-

Citation: Balaram Pani., et al. "Synthesis and Characterization of Biogenic Iron Sulfide Nanoparticles in Cancer and Other Biomedical Applications: A Review". Acta Scientific Cancer Biology 6.2 (2022): 02-08.

Reg. No. 694/2009-10

ISSN: 2250-1193

Anukriti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 12, No. 6

Year-12

June, 2022

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief Prof. Vijay Bahadur Singh Head, Hindi Department Dean, Faculty of Arts Banaras Hindu University Varanasi

Editor

Dr. Ramsudhar Singh Ex Head, Department of Hindi Udai Pratap Autonomous College Varanasi

Published by SRIJAN SAMITI PUBLICATION

VARANASI (U.P.), INDIA Mob. 9415388337, E-mail : anukriti193@rediffinail.com, Website anukritijournals.com Reg. No. 694/2009-10 Anukriti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 12, No. 6, June 2022

प्राच्य वांगमय में राजधर्म एवं संस्थाओं का स्वरूप

Impact Factor: 5.029 ISSN: 2250-1193

डॉ० सतेन्द्र कुमार पाण्डेय असि० प्रो०, फूल सिंह बिष्ट राजकीय महाविद्यालय, लम्बगॉव, टि०ग०

राजधर्म शब्द शास्त्रीय है जिसका तात्पर्य है राजा का धर्म। महाभारत में भीष्म ने युधिष्ठिर को राजधर्म का उपदेश दिया। राज्य एवं राजा का प्रधान कर्तव्य दण्डनीति का सफल कियान्वयन।

तस्य सर्वाणि भतानि स्थावराणि चराणि च

राप्य राज्यान मानाय करवारे स्वयंत्र स्वयंत्र चारान्य च भयाद भीनाय करवारे स्वयंत्र स्वयंत्र चारान्य चारान्य चारान्य चारान्य चारान्य को धर्मशास्त्र का पर्याय माना जाता है यहापि उनमें वर्णित विचारों का स्वरूप क्षेत्र विशेष तक प्राचीन वैदिक वागमय को धर्मशास्त्र का पर्याय माना जाता है यहायि उनमें वर्णित विचारों का स्वरूप क्षेत्र विशेष तक लीमित नहीं अपितु वैविद्य से चुक्त था। बतुत्त धर्मगास्त्र के अपार्णत ही राजधर्म की चर्चा होती रही है। क्षित सभी धर्मा का सत्तरक कहा गया है। यहां के अपूज्यत राजविति मानाव विश्व को पारिसमें रिक्त है। आदि अपीक्षिकों तथी वाती हरकों दरण्ड विचान है। आदि कि वि विद्यास प्राचीत का चित्र के प्राचीन कि हो। अपित कि विवास के जिसमें के प्रमुख्य स्वाप्त के चार्म के सित्र इक्त में धर्म, अर्थ, काम, मोध पर एक लाख अध्यायों वाता एक मद्यान ग्रन्थ सिव्या इत ग्रन्थ के सीति (पातन चारल) नाम गण को गंकर विचास में सिव्या कि करके दत सब्द अध्यायों में सिव्या विचा ग्रन्थ के सीति (पातन चारल) नाम को गंकर विचास के स्विप्त करके दत सब्द अध्यायों में सिव्या विचा ग्राय। अपो चवरून बहुदन्सक को इक्त्यांवे में सिव्या कि तथा, विचा के प्रमुख्य में सिव्या और सिव्या और सिव्या नित्र सित्र साम दिया गया। पुन. "वार्कपर्य" को कान्य (उत्तम) ने एक सब्द अध्यायों में एक प्राच के सिव्या की सिव्या कि सित्र सिव्या कि सिव्या नित्र से सिव्या के स्वर्ण मंत्र के सिव्या के स्वर्ण मंत्र के सिव्या के स्वर्ण में इक्त से सिव्या कि सिव्या मान दिया गया। पुन. "वार्कपर्य" को कान्य में प्रमुख्य मान दिया गया। पुन. "वार्कपर्य" को को नित्र से प्रमुख्य मन्त्र में में इस्त्र सिव्या कि सिव्या के स्वर्ण में इक्त से सिव्या किया किया। विचार के स्वर्ण में इक्त में के राजधर्म का के निव्या मन्त्र में का स्वर्ण के स्वर्ण में इक्त में की से सिव्या किया। सिव्या के स्वर्ण में इक्त में का राजधर्म का निव्या के स्वर्ण में के स्वर्ण के अर्थशास्त्र के प्रमुख प्रमुख्य में से से खाता है। के प्रमुख विषयों से मेरा खाता है। मीतिप्रकाशिका में आया है कि बहुमा, महेरवर, स्कन्द इन्द्र, प्राचेतस, मनु , बृहस्पति, शुक्र, भारद्वाज एवं गौरशिश

राजधर्म के व्याख्याता थे।

राज्यम क व्याख्याता थे।

महाभारत मृहरूपित, भारदाज एवं अन्य लेखकों को 'राजशास्त्र' — प्रगंतार कहा है, मीति प्रकाशिका ने शासन पर लिखने वाले मानद एवं देव लेखकों को 'राजशास्त्राणां' — प्रणेतार' की उपाधि दी है। प्रोठ एडगर्टन द्वारा सम्पादित पंचतन्त्र के प्रथम लिखने में मनु , बृहरूपित, गुक पराशर एवं उनके पुत्र चाण्यव तथा अन्य लियों को नृश्यास्त्र के लेखक कहा गया है। इतका एक अन्य मान हैं 'राजस्त्रीति । शामित्यर्थ (कर्म) ने इत लाद का अर्थ किया है " यह शिवट राज्य के द्वारा अर्थ मार्ग पुर लाया जाता है, यह शास्त्र दण्ड देने की व्यवस्था करता है, इसी से इसे दण्डमीति की संज्ञा मिली है और यह सीनों लोकों में छाया हुआ है।

ताला में पाया हुआ है। वैदिक और बहुनण काल में राज्यशास्त्र के ग्रन्थ न डोने पर भी वैदिक वंगमय भर में इतस्तत. रखुट वचन मिलते हैं जिनते तत्कालीन राजशास्त्र और व्यवस्था का थोडा परिचय मिल जाता है। ऋरचेद में राजशास्त्र विषयक उरसेख बहुत कम है पर अथवेदर में उनकी संख्या पर्याप्त है परन्तु उनका सम्बन्ध प्रायः राजा से ही अधिक है। युद्धेद की साहिताओं और ब्राह्मणों में राज्यभिक कमा जायशंक्रण या उसके बाद किये जाने कोर भोने का वर्गन स्थान-स्थान परिता है। हस्ते प्रचलित है। इस्ते राजस्य की प्रतिच्या कैती थी, राज कर्मचारी कौन थे प्रजा से कौन-कौन से कुत बसूत किये जाते थे। इस्त्यादि विषय में बहुत अधिक

धातरों क्यों को था, राज कमचीरी कोन वे प्रचा थे कान-कान से कर वर्गत किया जात थे। इत्याद विषय ने बहुत आकत कानकारी प्राप्त होती है। इनमें बहुत से ऐसे कार में है जिनमें विनिम्न जातियों के परस्पर सम्बन्ध अधिकारी और स्थित का विदेवन है जिससे भी राज्य व्यवस्था पर पर्याप्त प्रकार पड़ता है। ई000 वहीं साताव्ये से व्यवस्था पर पर्याप्त स्थाप के स्वत्य कार्यात्मक आदि विषयों का विशेषाध्ययन सुरू हुआ। राज्यसास्त्र का अध्ययन भी इनी युग में हुआ इनीय्याय रहत विषय के तस्त्री प्राचीतनम ग्रम्थ जो समस्त्रत ई000 छठी सताव्ये में रचे गये, नम्प्ट हो गये । ई000 सात्वी श्राप्त में छोटे-छोटे राज्यों का अस्तित्व मिसता है, जिनसे सासक, मन्त्रियों एवं गुरूओं की वार्ता के

मध्य अनेक राजवास्त्रीय सिद्धानों का विकास हुआ। इन वार्ताओं के श्रेष्ठ उदाहरण महामारत का शानितपर्य है जिसमें धर्मराज युधिष्टिर गुरू भीम से अनेक विवाद्य प्ररम पृथते हैं। गणराज्यों की तमस्याओं की आलोचना करते समय नारद व कृष्ण के संवाद का सारांग अध्याय 81 में दिया गया है। शामिष्यर्व में अपूर्वत किये गये इन बार-विवादों में कुछ अवस्य राजापन पर सिखे गये ग्रम्थों के अशों के रूप में है। ईएफ्र नवी एवं 6 वीं तरी में राजसारत पर अनेक ग्रम्थ जरूर असितल में थे यदापि वे पीछे तब नष्ट हो गये हिन ग्रम्थों का काल प्रसिद्ध यूनानी तत्त्ववेता अरत्तु से पूर्व था। राजसारत विषयक सिद्धान्तों और ग्रम्थों का सर्वायिक परिचय इने महाभारत और